1937C What do women look for in a man

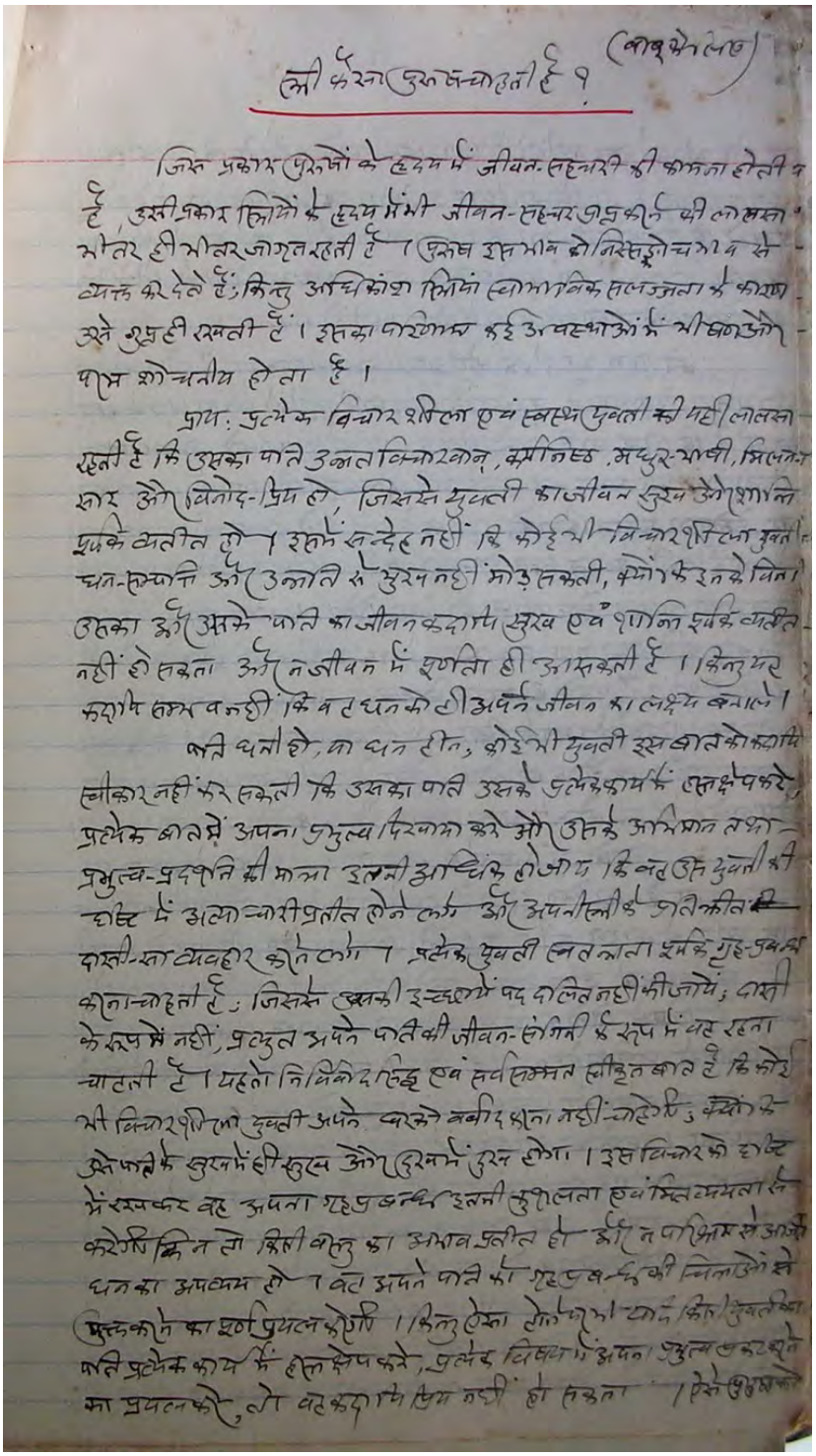

स्त्री कैसा पुरुष चाहती है ? (बाबूजी लेख)

जिस प्रकार पुरुषों के हृदय में जीवन-सहचरी की कामना होती है, उसी प्रकार स्त्रियों के हृदय में भी जीवन-सहचर प्राप्त करने की लालसा भीतर ही भीतर जाग्रत रहती है। पुरुष इस भाव को निस्संकोच भाव से व्यक्त कर देते हैं; किन्तु अधिकांश स्त्रियां स्वाभाविक सलज्जता के कारण उसे गुप्त ही रखती हैं। इसका परिणाम कई अवस्थाओं में भीषण और परम शोचनीय होता है।

प्राय: प्रत्येक विचार शील एवं स्वस्थ युवती की यही लालसा रहती है कि उसका पति उन्नत विचारवान्, कर्मनिष्ठ, मधुर-भाषी, मिलनसार और विनोद-प्रिय हो, जिससे युवती का जीवन सुख और शान्ति पूर्वक व्यतीत हो। इसमें सन्देह नहीं कि कोई भी विचारशील युवती धन-सम्पत्ति और उन्नति से मुख नहीं मोड़ सकती, क्योंकि इनके बिना उसका और उसके पति का जीवन कदापि सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत नहीं हो सकता और न जीवन में पूर्णता ही आ सकती है। किन्तु यह कदापि सम्भव नहीं कि वह धन को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना ले।

पति धनी हो, या धन हीन, कोई भी युवती इस बात को कदापि स्वीकार नहीं कर सकती कि उसका पति उसके प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करे, प्रत्येक बात में अपना प्रभुत्व दिखाया करे और उसके अभिमान तथा प्रभुत्व-प्रदर्शन की मात्रा इतनी अधिक हो जाय कि वह उस युवती की दृष्टि में अत्याचारी प्रतीत होने लगे और अपनी स्त्री के प्रति कीत-दासी-सा व्यवहार करने लगे। प्रत्येक युवती स्वतन्त्रता पूर्वक गृह-प्रबन्ध करना चाहती है; जिससे उसकी इच्छायें पद दलित नहीं की जायें; दासी के रूप में नहीं, प्रत्युत अपने पति की जीवन-संगिनी के रूप में वह रहना चाहती है। यह तो निर्विवाद सिद्ध एवं सर्वसम्मत स्वीकृत बात है कि कोई भी विचारशील युवती अपने घर को बर्बाद करना नहीं चाहेगी; क्योंकि उसे पति के सुख में ही सुख और दुःख में दुःख होगा। इस विचार को दृष्टि में रखकर वह अपना गृह प्रबन्ध इतनी कुशलता एवं मितव्ययता से करेगी कि न तो किसी वस्तु का अभाव प्रतीत हो और न परिश्रम से अर्जित धन का अपव्यय हो। वह अपने पति को गृह प्रबन्ध की चिन्ताओं से मुक्त करने का पूर्ण प्रयत्न करेगी। किन्तु ऐसा होते हुए भी यदि किसी युवती का पति प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करे, प्रत्येक विषय में अपना प्रभुत्व प्रकट करने का प्रयत्न करे, तो वह कदापि प्रिय नहीं हो सकता। ऐसे पुरुषों को

कोई भी स्त्री पसंद नहीं करेगी। यदि किसी पुरुष को संदेह हो कि उसकी स्त्री अपव्यय करती है तो उसे चाहिए कि प्रतिमास एक निश्चित रकम दे दे और देख ले कि उसकी स्त्री — यदि वह विचारशीला हो — उसी रकम से किस प्रकार सुन्दरता, कुशलता एवं सन्तोषपूर्वक गृह-प्रबन्ध कर लेती है। पैसे-पैसे का हिसाब रखने वाला पति कदापि प्रिय नहीं हो सकता।

जो पुरुष अपनी स्त्री को अपनी सम्पत्ति समझता है और उसके प्रति उदासीनता दिखाता है, वह कदापि प्रिय पति नहीं हो सकता। प्रत्येक स्त्री चाहती है कि उसका पति उसके प्रत्येक कार्य की प्रशंसा करे, उसका पहनावा-देखकर प्रसन्नता प्रकट करे, उसके प्रति दिलचस्पी दिखाए और समय-समय पर प्रेमोपहार प्रदान किया करे; किन्तु ये सभी बातें केवल शिष्टाचार-प्रदर्शन के लिए ही नहीं, प्रत्युत सत्य-प्रेम-पूर्ण होनी चाहिए। क्योंकि स्त्री-हृदय सत्य तथा असत्य-प्रेम परीक्षा के लिए कसौटी का काम करता है। वह दिन बहुत पीछे छूट गया, जब स्त्रियां केवल मीठी बातों के फुसलावे में आ जाती थीं और पुरुषों का मिथ्या प्रेम-चक्र उन पर चढ़ जाता था। जिस प्रकार पुरुष को अपने किसी कार्य में सफलता प्राप्त होने पर आत्म-सम्मान एवं आत्म-गौरव का बोध होता है उसी प्रकार पति का निष्कपट प्रेम पा लेने पर स्त्री को भी आत्म सम्मान और आत्म गौरव का बोध होता है।

पुरुषों में अपनी ही बात रखने के लिए जो हठ का दुराग्रह होता है — वह ऐसा दुर्गुण है, जिसे कोई भी स्त्री कदापि पसंद नहीं करती। इस दुर्गुण के कारण स्त्री का शुद्ध और सात्विक प्रेम भी नष्ट हो जाता है और स्त्री-पुरुष के बीच परस्पर-विरोधी भावों की ऊंची दीवार खड़ी हो-जाती है, जिससे दोनों का मिलना भी एक दिन कठिन हो जाता है। स्त्री उसी पुरुष से अधिक प्रेम करती है, जिसके विचार, उसके विचारों से मिलते हैं। दाम्पत्य जीवन को विषमय एवं असह्य बनाने वाली दूसरी वस्तु है — स्वार्थपरता। इससे भी स्त्री-पुरुष के जीवन में वैमनस्य उत्पन्न हो जाता है। जब स्त्री-पुरुष में एक हाथ से लेने और दूसरे हाथ से देने की नीति — काम करने लगती है, तब दाम्पत्य-जीवन असह्य-भार-स्वरूप प्रतीत होने-लगता है। ऐसे विचार वाले पुरुष को भी कोई स्त्री पसंद नहीं करती।

इसमें सन्देह नहीं कि विभिन्न स्त्रियों के विचार-विभिन्न-प्रकार के होते हैं। कुछ ऐसी स्त्रियां हैं, जो अपने पति के साथ ठीक वैसा-ही प्रेम करती हैं, जैसा प्रथम गर्भजात सन्तान के साथ माताएं किया करती हैं;

—अर्थात् पति के उचित-अनुचित सभी प्रकार के व्यवहारों को क्षमाशील हृदय से सहन कर लेती हैं; किन्तु अपने सात्विक-हृदय के प्रेम का प्रदर्शन करने में कभी न्यूनता नहीं आने देतीं। कुछ स्त्रियां धन, मान और प्रतिष्ठा के लिए विवाह करती हैं, पति गृह को सुखी और अपने सद्व्यवहारों से स्वर्गागार-बनाने की कामना उनके हृदय में नहीं होती। नारी-जीवन में इस प्रकार के विचार बाल-जीवन में पितृ-गृह में प्राप्त शिक्षा-दीक्षा के कारण ही उत्पन्न होते हैं; किन्तु वास्तविक नारीत्व तो वहीं दृष्टिगोचर होता है जहां स्त्री को विनोद-प्रिय एवं हंस-मुख पति मिलता है। ऐसे ही पुरुषों को स्त्री हृदय से चाहती है।

इस प्रकार मनोनुकूल पति पाने पर स्त्री कभी उसके अलावा अन्य का नाम भी नहीं लेगी। उसे अपने घर में अनन्त सुख और शान्ति भी प्राप्त होगी। ऐसा सुखी जीवन पाकर स्त्री अपना समय कितने ही उपयोगी कार्यों में लगा सकेगी। किन्तु यदि उसे मनोनुकूल पति नहीं मिले, यदि इच्छा के विपरीत कोई पुरुष उसके गले मढ़ दिया जाय, तो स्त्री का जीवन कदापि शान्ति और सुखमय नहीं हो सकता। पुरुषों को यह बात याद रखनी चाहिए।

— पद्मावती देवी द्विवेदी।

विश्वमित्र — मार्च १९३८ से

ही. ला. जैन

(मालिक-भवन तुकोगंज इन्दौर में लिखा)

९।३।३८